धृत्या यया धारयते मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः।
योगेनाव्यभिचारिण्या धृतिः सा पार्थ सात्त्विकी।।३३।।

धृत्या=धृति द्वारा; **यया**=जिस; **धारयते**=धारण करता है; **मनःप्राण-इन्द्रियक्रियाः**=मन, प्राण और इन्द्रियों की क्रियाओं को; **योगेन**=योग के अभ्यास द्वारा; **अव्यभिचारिण्या**=निरन्तर अनन्य भाव से; **धृतिः**=धृति; **सा**=वह; **पार्थ**=हे अर्जुन; **सात्त्विकी**=सात्त्विकी है।

अनुवाद

हे अर्जुन! योग के अभ्यास द्वारा जिस अचल और अनन्य धृति को धारण करके मनुष्य मन, प्राण और इन्द्रिय-क्रियाओं को वश में करता है, वह सात्त्विकी है।।३३।।

तात्पर्य

योग परमात्मा को जानने का एक साधन है। जो पुरुष चित्त, प्राण और इन्द्रिय-क्रियाओं को परमात्मा में एकाग्र करके अनन्य और अचल भाव सहित उनसे युक्त रहता है, वह कृष्णभावना में तत्पर है। ऐसी धृति (धारण-शक्ति) सात्त्विकी कहलाती है। **अव्यभिचारिण्या** शब्द का गूढ़ार्थ है। यह उन पुरुषों का वाचक है, जो कृष्णभावना में अनन्यभाव से तत्पर हैं, किस अन्य कर्म से कभी चलायमान नहीं होते।

यया तु धर्मकामार्थान्धृत्या धारयतेऽर्जुन।
प्रसंगेन फलाकांक्षी धृतिः सा पार्थ राजसी।।३४।।

यया=जिस; **तु**=परन्तु; **धर्मकामार्थान्**=धर्म, अर्थ और काम को; **धृत्या**=धृति द्वारा; **धारयते**=धारण करता है; **अर्जुन**=हे अर्जुन; **प्रसंगेन**=आसक्ति से; **फला-कांक्षी**=फल का अभिलाषी; **धृतिः**=धृति; **सा**=वह; **पार्थ**=हे अर्जुन; **राजसी**=राजसी है।

अनुवाद

जिस के द्वारा मनुष्य धर्म, अर्थ और कामरूप फलों में आसक्त रहता है, वह धृति राजसी है।।३४।।

तात्पर्य

जो मनुष्य सदा धर्म, अर्थ और कामरूप फल की इच्छा को धारण किए रहता है, केवल इन्द्रियतृप्ति की अभिलाषी है, तथा जिसके मन, प्राण और इन्द्रियाँ इसी में लगे हुए हैं, वह राजसी धृति से युक्त है।

यया स्वप्नं भयं शोकं विषादं मदमेव च।
न विमुञ्चति दुर्मेधा धृतिः सा पार्थ तामसी।।३५।।

यया=जिस धृति के द्वारा; **स्वप्नम्**=स्वप्न; **भयम्**=भय; **शोकम्**=शोक; **विषादम्**=विषाद; **मदम्**=मोह को; **एव च**=भी; **न**=नहीं; **विमुञ्चति**=छोड़ता;